कैद

वंदना कन्नौजिया
रूड़की

माँ के आँचल से निकलकर कभी न सोचा था कि जिन्दगी एक कैद बनकर रह जायेगी। एक ऐसी कैद जिससे निकल पाना एक सपना ही रह जायेगा। जानवरों को पिंजरे में इसलिए रखा जाता है कि वो लोगों को कुछ नुकसान न पहुँचा सके लेकिन एक लड़की को कैद में इसलिये रखा जाता है कि कोई उसे नुकसान न पहुँचा सके, क्या फर्क है एक जानवर और लड़की में, शायद नहीं।

बचपन एक मौज–मस्ती भरी जिन्दगी जिसमें किसी से डर नहीं और ना ही कोई चिन्ता, चारों तरफ का माहौल मस्तियों से भरा हुआ दोस्तों की शरारतें और प्यार भरी नोंक–झोंक। इस जिंदगी में कभी अहसास ना था कि दिन ऐसे पलट जायेंगे बड़े होने के साथ जिंदगी में भी अजीब बदलाव आ जायेगें। ऐसे बदलाव जिन्हें ना चाहते हुये भी लाना पड़ेगा। अपनी मन की सारी चाहतें खत्म हो गयी रह गया तो घरवालों का पिंजरा जिससे निकल पाना आसान नहीं था लेकिन फिर भी कहीं ना कहीं लगता शायद निकल पाऊँ इस पिंजरे की कैद से लेकिन ये सब इतना आसान नहीं था। अचानक घर की कैद खत्म होने का वक्त आया लेकिन ये वक्त कैद खत्म होने का नहीं एक पिंजरे से दूसरे पिंजरे की कैद में जाने का था मतलब शादी जो एक बंधन नहीं एक कैद जहाँ खुद की इच्छाएं, जरूरतें सब का कोई महत्व नहीं। सिर्फ वह करना जो सबको अच्छा लगे, कभी खुद के लिये कुछ था ही नहीं। सोचा क्या पता जिंदगी में आगे खुद के लिये कुछ कर पाऊँ कुछ वक्त जो सिर्फ मेरा हो लेकिन सपने जो कभी पूरे ही नहीं होते उम्र का एक पड़ाव और कम हो गया लेकिन जिंदगी कैद से निकल ही ना पायी वक्त तेजी से गुजर रहा था लेकिन इंतजार था तो उस दिन का जब मैं इस कैद से निकल पाती अब तो धीरे–धीरे शरीर ने भी साथ देना छोड़ दिया था शायद जिंदगी के अंतिम दिन पास आ गये थे और अब मेरा सपना पूरा होने वाला था पता है क्या – पिंजरे की कैद से निकल पाना लेकिन अपनी जिंदगी में ये दिन देख पाना आसान नहीं था इसलिए मौत को गले लगाना जरूरी हो गया था क्योंकि एक यही तो रास्ता था मेरे पास पिंजरे की कैद से निकल पाने का और यह रास्ता अब जरूरी था अपनाना क्योंकि थक गयी थी मैं इस जिंदगी भर की कैद से इसलिए अब निकलना चाहती थी इस कैद से और अचानक मेरा सपना पूरा हो गया मुझे हमेशा के लिये मुक्ति मिल गयी उस पिंजरे की कैद से।

"कभी–कभी कुछ सपने जिंदगी के पहले पड़ाव पर देखने के बाद जिंदगी के आखिरी पड़ाव तक पूरे हो पाते हैं।"

विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा की हिमायत करने वाले जनता के दुश्मन हैं।

महात्मा गाँधी